संस्कृत नाटकों में विलक्षण रामकथा

देवर्षि कलानाथ शास्त्री
(राष्ट्रपति सम्मानित), प्रधान सम्पादक ''भारती''संस्कृत मासिक
पीठाचार्य, भाषामीमांसा एवं शास्त्रशोध पीठ - विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान, जयपुर
पूर्व अध्यक्ष - राजस्थान संस्कृत अकादमी
आधुनिक संस्कृत पीठ - जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय
पूर्व निदेशक - संस्कृत शिक्षा एवं भाषा विभाग, राजस्थान सरकार
सदस्य - संस्कृत आयोग, भारत सरकार

रामकथाश्रित संस्कृत नाटकों के लेखकों में अग्रगण्य हैं, भास, भवभूति दिङ्नाग, मुरारि, राजेशखर शक्तिभद्र, दामोदर, यशोवर्मा, जयदेव, सुभट, भास्कर, रामभद्र, मायुराज, क्षीरस्वामी, रामचन्द्र, हस्तिमल्ल, व्यासमिश्र महादेव आदि नाटककार जिन्होंने प्रमुखतः वाल्मीकि से कथासूत्र लिया था किन्तु कथा संयोजन में, चरित्र-चित्रण में एवं शैलीयोजना में अपनी प्रतिभा से इतनी नवीन उद्भावनाएं कीं कि २५-३० ये नाटक एक ही कथानक को लेकर लिखे गये नहीं लगते। और तो और इन नाटककारों ने चरित्रनायक राम के चरित्रचित्रण में इतना वैविध्य सँजोया है कि किसी ने उन्हें धीरोदात्त तो किसी ने धीरप्रशान्त, किसी ने धीरललित के रूप में चित्रित किया है।

संस्कृत के नाटकों में मंचापयुक्तता, कथावस्तु, देशकाल, शैली, वाच्य और नाट्यांगों का जितना महत्त्व है उतना ही महत्त्व नायकों का है। नाटक का नायक एक ऐसा व्यक्तित्व होना चाहिए जिसके चरित्र चित्रण के लिए नाटककार द्वारा एक पूरे नाटक लिखे जाने का वास्तव में कोई औचित्य हो। इसीलिए क्लासिकाल नाटकों में यह परंपरा प्रायः निभाई जाती रही है कि नायक का व्यक्तित्व महिमशाली तो होना ही चाहिये- उसमें अन्य गुण भी होने चाहिए जैसे शूरता, लालित्य, गंभीरता, और उदात्तता । नायकों के इस दृष्टि से जो चार भेद किये गये धीरोद्धत्त, धीरललित, धीरप्रशान्त और धीरोदात्त उनसे भी अधिक जैसे विविधता राम के चरित्र में मिल जाती है। इसका यह अर्थ नहीं है कि इन चार प्रकारों या टाइप्स में संस्कृत के सभी नाटकों के नायक फिट किये जा सकते हैं। प्रत्येक नायक का चरित्र इतना वैविध्यपूर्ण और सर्वांगीण बन पड़ा है कि उसे एक जीवन्त और पूर्ण चरित्र कहा जा सकता है किन्तु राम के चरित्र में तो और भी वैविध्य नाटककारों ने कह दिया है।

रामचन्द्र का चरित्र संस्कृत के अनेक नाटकों, महाकाव्यों आदि का प्रमुख वर्ण्य रहा है। रामकथा पर आधारित काव्यों और नाटकों की गिनती नहीं की जा सकती। महाकवि मुरारि ने तो कहा भी है **स्वसूक्तीनां पात्रं रघुतिलकमेकं कलयतां कवीनां को दोषः स तु गुणगणानामवगुणः** । इतने सारे कवियों ने रामकथा को ही अपना वर्ण्य चुना इसमें कवियों का दोष नहीं अपितु राम के चरित्र का ही दोष है जिसमें वे सभी तत्त्व विद्यमान हैं जिन्हें देखते ही कवियों को उन्हें अपना चरित्रनायक बनाने की इच्छा हो जाती है। वैसे जहां-जहां राम का चरित्र वर्णित है वहां उनके दो-चार गुण तो एकरूपता से सर्वत्र वर्णित हुए हैं- जैसे मर्यादा पालन, धीर-गंभीरता और सुशीलता। फिर भी यह उल्लेखनीय है कि प्रत्येक नाटककार ने उनके चरित्र के केवल यही पक्ष वर्णित किये हों या सभी नाटकों के राम का एक सा ही व्यक्तित्व लगता हो सो बात नहीं है। प्रमुख नाटककारों ने उनके चरित्र में ये सभी गुण बतलाते हुए भी उनके इस प्रकार विविध आयाम दिये हैं कि प्रत्येक नाटककार के वर्ण्य राम का एक अनूठा और निराला ही चित्र उभरता है।

भास संभवतः रामकथा के सबसे पुराने नाटकार हैं। उनके अभिषेक और प्रतिमा नामक नाटकों में रामकथा वर्णित है। यज्ञफल नाटक भी रामकथा पर ही है पर कुछ विद्वान् उसे भास का लिखा हुआ ही नहीं मानते। नाटककारों ने वाल्मीकि की रामायण की रामकथा का प्रमुख स्रोत अवश्य माना है, किंतु अपने दृष्टिकोण में सहायक अन्य अनेक उपकथाओं और घटनाओं की योजना भी स्थान-स्थान पर उन्होंने की है। भास ने भी ऐसा ही किया है। भास के राम एक विवेकी राजनीतिज्ञ के रूप में हमारे सामने आते हैं। आदर्श रक्षक, उदार और सत्यसंध होने के साथ-२ उनमें राजोचित दूरदर्शिता भास ने विशेषतः चित्रित की है।

प्रतिमा नाटक इस घटना से शुरु होता है कि राम का यौवराज्याभिषेक हो रहा है- उसी समय मन्थरा राजा दशरथ के कान में कुछ कहती है और दशरथ बीच में ही अभिषेक रोक देते हैं- और राम से थोड़ी देर आराम कर आने को कहते हैं। इसी बीच कैकयी राम का वनवास और भरत के लिये युवराज पद मांग लेती है। सारे राजमहल में हल्ला मच जाता है किन्तु राम उसे एक पूर्वनिश्चित घटना की तरह बहुत सहज भाव से लेते हैं। उनका पुराना परिचारक जब यह समाचार देने जाता है और कैकयी को भलाबुरा कहता है तो वे उसे समझाते हैं कि इस में कैकयी का कोई दोष नहीं है। महाराज दशरथ का जब कैकयी के साथ विवाह हुआ था तब कैकयी के पिता ने उनसे यही शर्त करवाई थी कि यदि कैकयी का पुत्र ज्येष्ठ पुत्र हुआ तो वह दशरथ के राज्य का उत्तराधिकारी होगा ही किन्तु यदि वह ज्येष्ठ न भी हुआ तो भी वही राज्य का अधिकारी होगा। इसके अनुसार कैकयी ने अपना हक ही मांगा है इसमें किसी का हक मारा नहीं है। दरअसल तो मेरा यौवराज्याभिषेक होने से भरत का हक मारा जा रहा था। वह अब बच गया है इसलिये मुझे प्रसन्नता है

शुल्के विपणितं राज्यं पुत्रार्थे यदि याच्यते।
तस्या दोषोऽत्र नास्माकं भ्रातृराज्यापहारिणाम्॥

वास्तव में बात भी यही थी। वाल्मीकीय रामायण में यद्यपि यह सारा विवरण स्पष्ट किया नहीं मिलता पर वहां भी राम भरत को यह बात तब बताते हैं जब वे उन्हें लिवाने चित्रकूट पहुँचते हैं- **मातामहे समाश्रौषीद् राज्य-शुल्कमनुत्तमम्।** इससे स्पष्ट है कि वाल्मीकि को इस शर्त की जानकारी थी। भास तो इसी पर पूरा जोर देते हैं। दशरथ द्वारा की हुई इस शर्त की बात केवल राम को मालूम थी। स्वयं भरत को भी नहीं। इसीलिये ज्येष्ठ पुत्र के राज्यारोहण के सार्वभौम न्याय के विरुद्ध अपनी इस शर्त पर लज्जित और ज्येष्ठ पुत्र राम को ही युवराज बनाने की अपनी इच्छा के वशीभूत होकर राजा दशरथ ने कैकयी को बिना बताये और भरत की अनुपस्थिति में राम का अभिषेक करने की बात जब राम को बतलाई हो राम ने इसे अस्वीकार कर दिया। पिता के अत्यन्त आग्रह करने और प्राणों की शपथ दिलाने पर वे जैसे तैसे इस बात के लिये सहमत हुए थे- **अप्रतिगृह्यमाणेष्वनुनयेषु आपन्नजरा-दोषैः स्वैः प्राणैरस्मि शापितः।**

इस घटना को सुनते ही लक्ष्मण आग-बबूला हो जाते हैं और धनुषबाण उठाकर कैकयी की ओर जाने लगते हैं। राम जिस संजीदगी से उन्हें समझाते हैं वह उनकी विवेक दृष्टि की परिचायक है-

ताते धनुर्नमय सव्यमवेक्षमाणे मुञ्चानि मातरि शरं स्वधनं हरन्त्याम्?
दोषेषु बाह्यमनुजं भरतं हनानि, किं रोषणाय रुचिरं त्रिषु पातकेषु?

आखिर दोष किसका है जिसे मारा जाय- राजा दशरथ को क्या इस बात पर मार दिया जाय कि वे अपनी प्रतिज्ञा का पालन क्यों कर रहे हैं? माता कैकयी को मार दिया जाए कि वे अपना हक क्यों मांग रही हैं? और भरत को तो कुछ भी मालूम नहीं, उसे इसीलिये मार डालें?

सीताहरण के प्रसंग में अपनी पत्नी के इस चाव को पूरा करने के लिये ही कि उसे सुनहला हिरन का चमड़ा चाहिये, राम का सुवर्णमृग के पीछे भाग खड़ा होना संभवतः भास के राम जैसे उदात्त चरित्र के लिये उचित नहीं लगा इसलिये उन्होंने वहां एक बड़ी सुन्दर योजना की है। पंचवटी में रावण ब्राह्मण बनकर आता है और राम को बतलाता है कि उनके पिता दशरथ का श्राद्ध है। यदि पितरों को अखण्ड स्वर्गलोक की प्राप्ति करानी हो तो कांचनपार्श्व नामक सुनहरे पहाड़ी हिरन के मांस से श्राद्ध करना चाहिये। ब्राह्मण के इस आदेश को सुनकर राम हिमालय पर्वत से कांचनपार्श्व मृग

मार लाने को तैयार हो जाते हैं। उसी समय मारीच स्वर्णमृग बनकर वहीं आ जाता है। रावण कहता है देखो ईश्वर की कृपा से यहीं सुनहला हिरन आ गया शीघ्र इसे मार लाओ। राम इस कार्य हेतु लक्ष्मण को भेजना चाहते हैं पर लक्ष्मण तपोवन के कुलपति के स्वागतार्थ गये होते हैं अतः राम को स्वयं जाना होता है और ब्राह्मण वेशधारी रावण सीताहरण कर लेता है। इस प्रकार सीता के चाव को पूरा करने के लिये नहीं बल्कि पिता के श्राद्ध की दृष्टि से राम सुवर्णमृग का पीछा करते हैं जिसमें गौरव और औचित्य भी, यह भास की दृष्टि मालूम होती है।

भवभूति संस्कृत के प्रौढ़ और अभिजात नाटककार हैं। उनके नाटकों में महावीरचरित और उत्तररामचरित रामकथा पर आधारित हैं। महावीरचरित में विश्वामित्र के यज्ञ से लेकर राम के रावण पर विजय प्राप्त कर राज्याभिषिक्त होने तक की कथा है तथा उत्तररामचरित में उसके बाद की अर्थात् सीता परित्याग से लेकर लवकुश के स्वीकार तक की।

इन दोनों नाटकों के नायक राम का व्यक्तित्व बिल्कुल निराला ही बन पड़ा है। महावीर चरित के राम वीर रस के आलंबन हैं तो उत्तररामचरित के राम करुण रस की जीती जागती मूर्ति हैं। उदात्त और धीरगंभीर होने के बावजूद उनका कारुण्य पत्थर को भी पिघला देता है।

महावीरचरित का शिल्प अधिक तकनीकी है। वहां नायक राम के उत्कर्ष से जलने वाला तथा उनके प्रत्येक कार्य में विघ्न डालने वाला प्रतिनायक रावण उसी प्रकार चित्रित किया गया है जिस प्रकार हिन्दी फिल्मों में हीरों के प्रत्येक कार्य में खलनायक साजिशें रचकर विघ्न डालता है और हीरो उन सबको आननफानन में बड़ी खूबी से उधेड़ देता है और अन्त में विजयी हो जाताहै। रावण शूर्पणखा को मन्थरा के वेष में भेजकर राम को वनवास दिलवाता है। रावण का कूटनीतिज्ञ मंत्री माल्यवान् सारे कुचक्र का संचालन करता है। इस नाटक में परशुराम का शिवधनुष तोड़ने पर क्रुद्ध होना तथा राम का उन पर विजय प्राप्त करना बड़े विस्तार से चित्रित है। शिवभक्त रावण धनुष के टूटने पर परशुराम को भड़काता है । वे तुरन्त मिथिला आ जाते हैं। क्रुद्ध परशुराम राम को मारने पर उतारू है और उनको दशरथ, वसिष्ठ, विश्वामित्र और शतानन्द पहले उन्हें समझाते हैं और उनके न मानने पर क्रुद्ध होकर स्वयं उनका मुकाबला कर उनका गर्व तोड़ने को तैयार हो जाते हैं क्योंकि उनमें से सभी को यह आशंका है कि किशोर राम के लिये जगद्विजयी परशुराम भारी ही पड़ेंगे। एक आत्मविश्वासी वीर की तरह राम के चहरे पर शिकन भी नहीं पड़ती। ये आराम से कंकणमोचन की वैवाहिक रीति को पूरा करने जनक के अन्तः पुर की ओर जाते हैं, वहां से लौटकर वे कहते हैं- आप गुरुजनों को परशुराम का मुकाबला करने की नौबत नहीं आयेगी। मैं ही इन्हें संभाल लेता हूँ- आप आराम करें। **अयमहं भोः**

कौशिकान्तेवासी रामः प्रणम्य विज्ञापयामि।

पौलस्त्यविजयोद्दाम-कार्तवीर्यार्जुनद्विषम्।
जेतारं क्षत्रवीर्यस्य विजय नमोस्तु वः ।।

और फिर जिस आसानी से राम परशुराम को काबू में कर लेते हैं। उस पर वसिष्ठ को आश्चर्य होता है। वे कहते हैं, राम की इस खूबी का वस्तुतः हमें पहले पता नहीं या-

अस्माभिरप्यनाशास्यौ रामस्य माहिमान्वयः ।
यत्कृतास्तेन कृतिनो वयं च भुवनानि च ॥

उत्तररामचरित में राम लोकमत का आदर करके सीता को वन में भेज तो देते हैं पर चिरसहचरी के वियोग से उनका प्रौढ़ हृदय उस भीगी हुई उम्र में बिलकुल बैठ जाता है। वे अन्दर ही अन्दर घुलते हैं।

अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः ।
पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः ॥

पंचवटी को देखते ही उन्हें सीता के साथ बिताये एक-एक दिन की स्मृति हो जाती है और वे विह्वल हो जाते हैं। राजा के कर्तव्य और एक प्रेमी पति के दाम्पत्यस्नेह के बीच का द्वन्द्व राम को कचोटता रहता है। वे कहते हैं :-

यथा तिरश्चीनमलातशल्यं प्रत्युप्तवन्तः सविषश्च दन्तः ।
तथा हि तीव्रो हृदि शोकशङ्कर्मर्माणि कृन्तन्नपि किं न सोढः ॥

जैसे कोई विषैला कांटा गड़कर निकल जाता है और उसकी टीस सालती रहती है, उसी तरह बचपन से लेकर विपत्तियों तक में सदा साथ निभाने वाली सीता के वियोग की टीस हमेशा मुझें कचोटती रहती है ओर मुझे चुपचाप उसे सहना पड़ता है।

लोकमत के अनुरोध से राम यह सब सहते हैं और जब लव के द्वारा जृम्भोकास्त्र के प्रयोग को देखकर समस्त जनता को यह पूर्णतः विश्वास हो जाता है कि लव और कुश राम के ही सुपुत्र हैं और जब वाल्मीकि आदि मुनि और गंगा, पृथ्वी आदि देवियां सीता को पूर्णतः पवित्र घोषित करती हैं तब राम लोकमत के अनुरोध पर ही सीता को स्वीकारते हैं जब देवियां घोषित करती हैं:-

जगन्मङ्गलमात्मानं कथं त्वमवमन्यसे ।
आवयोरपि यत् सङ्गत् पवित्रत्वं प्रकृष्यते।।

लक्ष्मण कहते हैं- आर्य, श्रूयताम्। सुनिये सीता की पवित्रता घोषित की जा रही है तो राम कहते हैं- सुनिये सीता की पवित्रता घोषित की जा रही है- तो राम कहते है- लोकः शृणोतु। जनता ही सुनेगी। मैं तो यह स्वयं जानता हूँ। इस नाटक में प्रारंभ से लेकर अन्त तक करुणा का जो सागर लहराता है उसे देखकर ही कहा गया है-

अपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्।

भवभूति ने राम में एक सच्चे स्नेही पति का ऐसा अनूठा चित्र खींच दिया है जिसकी मिसाल विश्व - साहित्य में मिलना कठिन है।

कैकयी का चरित्र रामकथा लेखकों के लिए एक चुनौती रही हैं। अधिकांश ने उसे दुष्टा, ईर्ष्यालु स्वभाव की स्वार्थिनी राजमाता चित्रित किया है। भास ने उसके चरित्र को नया ही रूप दिया है। शब्दवेधीबाण से मरते हुए श्रवण ने दशरथ को शाप दिया था कि वह पुत्र वियोग में मरेगा और उसे कोई निवापांजलि देने वाला भी नहीं रहेगा। इस शापका निराकरण तभी हो सकता था जब दशरथ की मृत्यु के समय कोई पुत्र अयोध्या में न हो अन्यथा पुत्रों का मरण पहले हो जाता। अतः पुत्रों के जीवन के लिए दशरथ स्वयं कैकयी से यह मांगने को कहते हैं कि चौदह दिन के लिए राम वनवास में जाएं। भरत और शत्रुघ्न बाहर होते हैं अतः तेरह दिन के लिए राम वनवास में जाएं। भरत और शत्रुघ्न बाहर होते हैं अतः तेरह दिन के और्ध्वदैहिक के बाद राम आदि सभी लौट आएँगे यह योजना थी पर हड़बड़ाहट में कैकयी के मुंह से चौदह दिन के स्थान पर चौदह वर्ष निकल जाता है। और सब कुछ उल्टा पुल्टा हो जाता है।

प्रतिमा नाटक में भास ने यह भी बताया है कि रावण विजय के बाद रामादि तो लंका से पुष्पक विमान में लौटते हैं पर पवनवेग शाली हनूमान को विमान की जरूरत नहीं होती अतः उन्हें पहले उड़ा दिया जाता है और वे भरत को राम के आने का संदेश दे देते हैं इस प्रकार नाटककारों ने अनेक नई योजनाएं की हैं जो उनकी कल्पना प्रवणता का प्रमाण है।